भारतीय दर्शन विषयक वक्तव्य 01

दर्शन शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के संस्कृत ऑनर्स द्वितीय वर्षीय छात्रों के तृतीय पत्र की 'ग' अन्विति के लिए। भारतीय दर्शन के बारे में विभिन्न पुस्तकों से विद्यार्थियों के अध्ययनार्थ पाठ्य सामग्री संकलन)

पाठ्य संकलनकर्त्ता : डॉ. विकास सिंह, संस्कृत विभागाध्यक्ष, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार)

भारतीय दार्शनिक ग्रन्थों में 'दर्शन' शब्द की कोई स्पष्ट परिभाषा प्राप्त नहीं होती है। दर्शन शब्द का जो व्युत्पत्ति लभ्य अर्थ प्राप्त होता है उसी से हमें सन्तोष करना पड़ता है। यह व्युत्पत्ति लभ्य अर्थ अपने आप में इतनी अधिक व्यापकता लिये हुए है कि वह सभी दार्शनिकों को सन्तुष्ट करने के लिये प्रयाप्त है।

दर्शन शब्द 'दृश्' (देखने) धातु से बना है। दर्शन शब्द की व्युत्पत्ति की जाती है-

दृश्यते अनेन इति दर्शनम्, दृश्यते यत् तत् दर्शनम्।

जिसके द्वारा देखा जाय, और जो देखा जाय वह दर्शन है। इस व्युत्पत्ति के अनुसार इन्द्रियों के द्वारा बाह्य जगत को देखा जाता है। इसलिये इन्द्रियाँ और दृश्यमान बाह्य जगत् सब कुछ दर्शन की श्रेणी में आता है। दर्शन शब्द का व्युत्पत्ति जन्य अर्थ है,

देखना, विचारना, श्रद्धा करना। वस्तुत: जीवन के प्रति मनुष्य का दृष्टिकोण ही दर्शन है।[1]

पश्चिम में दर्शन शब्द के लिये Philosophy शब्द का प्रयोग किया जाता है। फिलास्फी का उद्देश्य केवल सत्य की खोज है, बुद्धि द्वारा रहस्य का अनावरण करना है। यह बात Philosophy के शाब्दिक अर्थ 'ज्ञन के प्रति प्रेम' (फिलास=प्रेम, सोफिया=ज्ञान) से भी स्पष्ट होती है। इसके विपरीत भारतीय दार्शनिक दर्शन को जीता है। यह उसके लिये जीवन शैली या विधि है, "दर्शनशास्त्र का मुख्य लक्ष्य आत्मस्वरूप प्रतिपादन है"[2]

प्लेटो कहता है कि केवल दार्शनिक ही नित्य तथा अपरिवर्तन को समझने में समर्थ है और जो अनेक तथा परिवर्तनशील प्रदेश में विचरते है वे दार्शनिक नहीं हैं।

दृश्यते यत् तत् दर्शनम् में यत् शब्द से निम्नलिखित प्रश्नों पर प्रकाश पड़ता है। जैसे- विश्व का स्वरूप क्या है? इसकी उत्पत्ति किस प्रकार और क्यों हुई? विश्व का कोई प्रयोजन है या प्रयोजनहीन है। आत्मा क्या है? जीव क्या है? ईश्वर है या नहीं? ईश्वर का स्वरूप क्या है? जीव का अन्तिम लक्ष्य क्या है? इन प्रश्नों को देखने से पता चलता है कि सम्पूर्ण विश्व दर्शन का विषय है।[3] हक्सले सम्पूर्ण मानव जाति को दार्शनिक की श्रेणी में रखता है। उसका कथन है कि "हम सबों का विभाजन

---

[1] हिन्दी सर्वदर्शन संग्रह, प्रो. उमाशंकर शर्मा ऋषि, पृष्ठ-२६

[2] न्यायदर्शनम्, श्री नारायण मिश्र, पृष्ठ-८

[3] भारतीय दर्शन की रूपरेखा, प्रो.हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ-१५

दार्शनिक और अदार्शनिक के रूप में नहीं, बल्कि कुशल और अकुशल दार्शनिक के रूप में ही सम्भव है"।[4]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१.भारतीय दर्शन, डा.शोभा निगम, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, २००८

२.हिन्दी सर्वदर्शन संग्रह, प्रो. उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी.

३.न्यायदर्शनम्, श्री नारायण मिश्र, चौखम्भा संस्कृत भवन, वाराणसी,२००७.

५.भारतीय दर्शन की रूपरेखा, प्रो.हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, २००7

[4] वहीं, पृष्ठ-१५